ISSN: 0973-0583

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि

अनामिका कुमारी

एम० एड० शोधार्थी, संत जेविएर्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन (स्वायत्त), दीघा घाट, पटना -11

डॉ० सुशील कुमार सिंह

प्राध्यापक, संत जेविएर्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन (स्वायत्त), दीघा घाट, पटना-11

शोध सार

वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या समायोजन की है। समायोजन परिवार के साथ, समाज के साथ। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती हैं, जिनका उसे समय-समय पर सामना करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार समायोजन करने का प्रयत्न करता है। समायोजन की क्षमता कहीं न कहीं हमारे संवेगात्मक बुद्धि से प्रभावित होती है। हम अपने संवेगों पर जितना अधिक नियंत्रण रख सकते है, उतना ही अधिक हम खुद को समायोजित रख सकते है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि के स्तर पर अध्ययन करना है। इस अध्ययन के लिए वैशाली जिले के 4 माध्यमिक विद्यालयों से 196 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण के रूप में सिन्हा एवं सिंह (1971) द्वारा प्रमापीकृत समायोजन मापनी को अंगीकृत एवं मंगल संवेगात्मक बुद्धि सूची (1971)को अंगीकृत कर प्रयोग किया गया है। शोधार्थी ने यह पाया कि लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है जबकि शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है। लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

मूल शब्द : माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि,समायोजन

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद के अनुसार:- "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण हो, मस्तिष्क की शक्ति बढे, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके"

शिक्षा प्राप्त करने से हमारा तात्पर्य सिर्फ सूचनाओं का संकलन करना नहीं बल्कि, ज्ञान, सदाचार, उचित आचरण, नैतिकता और मूल्य को अपने अन्दर अधिग्रहण करने से है। शिक्षा को हम जल से सुमेलित कर सकते हैं। जिस तरह से जल अपने पथ पर एक उचित दिशा और दायरे में बढ़ती रहती है तो यह स्वच्छ और जीवनदायिनी होती है, स्थिर रहने पर यह दूषित और अपनी दिशा परिवत्तित करने पर विनाशकारी बन जाता है। उसी तरह शिक्षा भी है। शिक्षा अगर हस्तांतरित होती रहे तो यह बढ़ती रहती है, इसे अगर स्वयं तक सीमित रखो तो यह अनुपयोगी हो जाती है, और अगर एक अनुशासनहीन और दूषित वातावरण में इसका हस्तांतरण किया जाये तो यह विनाशकारी हो सकती है।

वर्त्तमान परिपेक्ष में यह आवश्यक हो गया है की शिक्षा को सही और अनुशासित माहौल में एक उचित व्यक्तित्व के विकास के लिये प्रदान किया जाए। एक ऐसे व्यक्तित्व का विकास जो की समाज

के लिये उपयोगी हो, समाज का सर्वांगीण विकास करने वाली हो। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को एक ऐसा माहौल प्रदान करना जिसमें वो स्वयं को समाज के अनुकूल ढाल सके तथा स्वयं को समायोजित रख सके। उचित शिक्षा हमें अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना सिखाती है। हमें इस तरह की शिक्षा प्रदान करनी होगी जो कि संवेगों पर नियंत्रण रखना सिखा सके, जिससे कि हम अपने समाज के साथ एक समायोजित जीवन जीना सीख सकें। एक समायोजित व्यक्ति वही हो सकता है जो समायोजन के तीनों क्षेत्र (भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक) में सामायोजन करने में निपुण हो। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समयोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। उचित शिक्षा व्यक्ति को वातावरण और समाज के अनुकूल जीवन जीना सिखाती है जो एक स्वच्छ और सभ्य समाज का निर्माण करने में सहायक होती है।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा:

पाठक (2009) "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, बौद्धिक क्षमता तथा अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन बौधिक क्षमता तथा अधिगम शैली पर प्रभाव के लिये जौनपुर के आठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को याद्दच्छिक प्रतिचयन विधि के अंतर्गत चयन किया गया जिनमें चार शहरी तथा चार ग्रामीण विद्यालय शामिल हैं। वि श्वसनीयता मापने के लिये तीन विधियों का प्रयोग किया गया है (अर्धिवच्छेदन विधि 0.95 परिक्षण पुनपरीक्षण विधि 0.93 के आर 20 सूत्र 0.99। प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षो से यह परिणाम सामने आया कि जिस बालक की बौद्धिक क्षमता उच्च होती है उसकी समायोजन क्षमता भी उच्च होती है। जो बालक अपेक्षाकृत निम्न बौद्धिक क्षमता के होते हैं उनका समायोजन की क्षमता भी प्रभावित होती है।

मंगदा (2021) "उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन" नामक शीर्षक के अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुचे कि किशोरों में संवेगों का वेग बहुत अधिक प्रबल होता है। इस कारण से किशोरावस्था में संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी आवश्यक है। माता-पिता और अध्यापक को यह प्रयास करना चाहिए कि छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि को इस प्रकार विकसित की जाए जिसका उपयोग वो शिक्षा के क्षेत्र में कर सके और अपना एवं अपने देश के विकास में सहयोग प्रदान कर सके।

सिंह एवं अन्य (2022) "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन" का अध्ययन सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन से सम्बंधित प्रद्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आया कि विद्यार्थियो के संवेगात्मक बुद्धि का उसके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है अर्थात संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित नहीं करती है।

सिंह एवं शर्मा (2023) "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन" यह अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली जिले के प्राथमिक छात्र के उपर किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों एवं विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकल कर सामने आया है कि उच्च प्राथमिक स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में और बहु बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन की सार्थकता

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी प्राय: किशोरावस्था के होते हैं, किशोरावस्था में संवेग से

सम्बंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को पहचानना और इनका निवारण करना एक अभिभावक और शिक्षक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन और उनकी शैक्षिक उपलब्धि दोनों पर प्रभाव पड़ता है, जो कि सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है। नकारात्मक प्रभाव को कम करने में यह अध्ययन शिक्षकों और अभिभावको दोनों की मदद कर सकता है। उचित कार्ययोजना तैयार करने में भी यह शिक्षकों और अभीभावको की मदद कर सकता है।

समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन और संवेगात्मक बुद्धि

अध्ययन के उद्देश्य

1. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर ज्ञात करना।
2. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर ज्ञात करना।
3. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर ज्ञात करना।
4. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर ज्ञात करना।

शून्य परिकल्पना

1. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
2. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
3. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

सिन्हा एवं सिंह (1971) द्वारा प्रमापीकृत समायोजन मापनी (अंगीकृत)

मंगल संवेगात्मक बुद्धि सूची (1971) (अंगीकृत)

शोध विधि

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि

इस अध्ययन में वैशाली के चार सरकारी माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।

प्रतिदर्श

यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि के द्वारा माध्यमिक विद्यालय के 196 विद्यार्थियों का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया है, जिनमें छात्रों की संख्या 61और छात्राओं की संख्या 135 हैं।

सांख्यिकीय प्रविधियां

1. माध्य
2. माणक विचलन
3. टी- अनुपात तथा
4. सह-सम्बन्ध

नल परिकल्पनाओं का परीक्षण

नल परिकल्पना 1 लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1 लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन 5% सार्थकता स्तर पर टी मूल्य का मान 1. 97 से कम है।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन का माध्य 34.81 तथा मानक विचलन 4.21 है, वही छात्राओं का माध्य 35.41 एवं मानक विचलन 4.86 है। टी-मूल्य का मान 0.88 है जो 5% सार्थकता स्तर पर टी मूल्य का सारणी मान 1.97 से कम

है जिसके कारण नल परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। अर्थात लिंग के आधार पर छात्र और छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -1

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी वेल्यू	अभियुक्ति
छात्र	61	34.81	4.21	0.88	सार्थक
छात्रा	135	35.41	4.86		नहीं

नल परिकल्पना 2.

शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 2

शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन

शिक्षण माध्यम	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी वेल्यू	अभियुक्ति
हिन्दी	115	38.46	5.28	4.63	सार्थक
अंग्रजी	81	34.82	5.28		

5: सार्थक स्तर पर टी का मान 1.97 से अधिक है।

तालिका 2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के हिंदी भाषा के विद्याथियों का समायोजन स्तर का माध्य 38.46 तथा मानक विचलन 5.62 है, वही अंग्रेजी भाषा के छात्रों का माध्य 34.82 एवं मानक विचलन 5.28 है। टी मूल्य का मान 4.63 है जो 5: सार्थकता स्तर पर टी मूल्य का सारणी मान 1.97 से अधिक है जिसके कारण नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात शिक्षा के माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

नल परिकल्पना 3.

लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3

लिंग के आधार पर विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी वेल्यू	अभियुक्ति
छात्र	61	25.85	6.46	1.91	सार्थक
छात्रा	135	27.72	5.96		नही

5: सार्थकता स्तर पर टी का सारणी मान 1.97 से कम है।

तालिका 3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का संवेगात्मक बुद्धि स्तर का माध्य 25.852 तथा मानक विचलन 6.462 है, छात्राओं का माध्य 27.718 एवं मानक विचलन 5.960 है। टी मूल्य का मान 1.91 है जो 5% सार्थकता स्तर पर टी-मूल्य का सारणी मान 1.97 से कम है जिसके कारण नल परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है अर्थात लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

नल परिकल्पना 4. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं ।

तालिका 4

शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि।

शिक्षण माध्यम	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी वेल्यू	अभियुक्ति
हिन्दी	115	28.63	5.87	2.68	सार्थक
अंग्रजी	81	27.72	6.92		

5: सार्थक स्तर पर टी का मान 1.97 से अधिक है।

तालिका 4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के हिंदी भाषा के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि स्तर का माध्य 28.63 तथा मानक विचलन 5.87 है, वहीं अंग्रेजी भाषा के छात्रों का माध्य 25.56 एवं मानक विचलन 6.91है। टी मूल्य का मान 2.68 है जो 5% सार्थकता स्तर पर टी मूल्य का सारणी मान

1.97 से अधिक है जिसके कारण नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात शिक्षा के माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं हैं जबकि शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है। लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, अप्लायड साइंस -सोशल साइंस आई एस एस एन : 2581- 9925, वॉल्यूम 02, स. 01, जनवरी-मार्च, 2020 पेज स. 204-208
2. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स अक्टूबर (2018) आई जे सी आर टी, वॉल्यूम 6, इशू 4,आई एस एस एन :2320-2882 पेज सं0 942-953
3. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स अगस्त (2023) आईजेसीआरटी 2308264, वॉल्यूम 11, इशू 8,आईएसएसएन:2320-2882पे, पेज सं0 367-372
4. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स अगस्त (2023) आईजेसीआरटी 2308264, वॉल्यूम 11, इशू 8, आईएसएसएन :2320-2882 पे, पेज सं0 367-372
5. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंस (2018), वॉल्यूम 8, इशू 11 आई एस एस एन 2249-2496 यु.एस. ए.
6. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (2021) प्रिट आई एस एस एन 2395-6091। ऑनलाइन आई एस एस एन 2395-602एक्स, वॉल्यूम 8, इशू 6 पेज संख्या 544-550
7. एरियस जे एट आल (2022) इमोशनल इंटेलिजेंस एंड अकेडमिक मोटिवेशन इन प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट्स साइकोलॉजीया : रेफ्लेक्साओ इ क्र्याटीका आर्टिकल सं 14(2022)
8. जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च जुलाई 2018 वोल 8 न.2 आई एस एस एन : 2320-9586
9. जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन दिसम्बर (2020) वॉल्यूम 8,-न.2 आई एस एस एन(पी): 2347-5676, आई एस एस एन (ओ): 2582-2357
10. डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ ओपन यूनिवर्सिटी ऑफ़ तंजानिया(2015) कोर.ए.सी.युके
11. पाठक कुमार एस 92009)माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, बौधिक क्षमता तथा अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध भी. बी. एस पूर्वांचल विश्वविद्यालय आई एन एफ एल ऑफ बी एन इ टी केंद्र 10608/17796
12. प्रोसिडिया- सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज (2015) वॉल्यूम 186 पेज सं 416-423
13. रामकृष्ण इंस्टीच्यूट ऑफ़ एजुकेशन रायपुर छत्तीसगढ़ आईएसएसएन 2277-6907 वॉल्यूम 07 पेज न. 52 टू 54
14. श्रृंखला एक शोधपत्रक वैचारिक पत्रिका वॉल्यूम 7, इश्यूज 2, अक्टूबर 2019 आई एस एस नं. 2321-290एक्स

❖❖❖